Class 10 Sub-Sanskrit Reader Ch-10 Date:26-9-20

दिए गए कार्य को Copy में पूर्ण करें।

सुभाषित-रत्नानि लघूत्तरात्मक – प्रश्नाः

प्रश्न 1.
अधोलिखित-प्रश्नानाम् उत्तराणि दीयन्ताम्-
(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-)
उत्तरम्:
(क) "सुभाषितम्" इति पदस्य कोऽर्थः?
(सुभाषित पद का क्या अर्थ है?)
उत्तरम्:
तद् वाक्यं वाक्यांशो वा सुभाषितमिति उच्यते यत् श्रुत्वा मनस्तोषः सुखानुभूतिः च जायते, यत् अन्येषां मनः क्लेषाय च भवेत् यस्य प्रयोगः अपरेषाम् अनादराय न स्यात्, यत् सत्य पूतं हितावहं च भवेत् यत्र नैतिकता-बुद्धिमत्ता-विवेकशीलता च स्यात्।

(वह वाक्य या वाक्यांश सुभाषित कहलाता है जिसको सुनकर मन को तुष्टि हो, सुख की अनुभूति होती हो, जो दूसरों के मन को कष्ट पहुँचाने वाला नहीं होता है। जिसका प्रयोग दूसरों के अनादर के लिए न हो, जो सत्य से पवित्र, हितकर होना चाहिए। जहाँ नैतिकता, बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता हो।)

(ख) पृथिव्यां कियन्ति रलानि? कानि च तानि?

(पृथ्वी पर कितने रत्न हैं? और वे क्या हैं?)

उत्तरम्:

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि सन्ति-

1. जलम्
2. अन्नम्
3. सुभाषितं च।

पृथ्वी पर तीन रत्न हैं-

1. जल
2. अन्न
3. सुभाषित

(ग) मूढः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?

(मूर्खा द्वारा रत्न की संज्ञा कहाँ दी जाती है?)

उत्तरम्:

मूढ़: पाषाण-खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

(मूळू द्वारा पत्थरों के टुकड़ों को रत्न की संज्ञा दी जाती है।)

(घ) पात्रापात्रविवेकः केन तुल्यं भवति?

(पात्र-अपात्र विवेक किसके समान होता है?)

उत्तरम्:

पात्रापात्र विवेको धेनु-पन्नगयोः इव भवति।

(पात्र-अपात्र का विवेक गाय और साँप की तरह होता है।)

(ङ) अजरामरवत् किं चिन्तयेत् प्राज्ञः?

(अजर-अमर की तरह विद्वान को क्या सोचना चाहिए?)

उत्तरम्:

अजरामरवत् प्राज्ञः विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।

(अजर-अमर की तरह मनुष्य को विद्या और धन के बारे में सोचना चाहिए।)

(च) कुत्र लज्जा त्यक्तव्या सुखार्थिना?

(सुख चाहने वाले को कहाँ लज्जा त्याग देनी चाहिए?)

उत्तरम्:

धन-धान्य प्रयोगेषु, विद्याया संग्रहेषु, आहारे व्यवहारे च

सुखार्थिना लज्जा त्यक्तव्या।

(धन-धान्य के प्रयोग में, विद्यार्जन में, आहार और व्यवहार में

सुखार्थी को लज्जा त्याग देनी चाहिए।)

(छ) 'मित्रम्' इति पदं द्वयक्षरं वा सार्द्धद्वयक्षरं वा?

(मित्रम् शब्द में दो अक्षर हैं या ढाई?)

उत्तरम्:

सार्द्धद्वयम् (ढाई)।

(ज) धनस्य पूरयितां हर्ता च कोऽस्ति?

(धन को पूरा करने वाला और हरने वाला कौन है ?)

उत्तरम्:

हरिः (विष्णु भगवान)।

प्रश्न 2.

'क' खण्डं 'ख' खण्डेन सह यथोचितं योजयतु-

(क खण्ड को ख खण्ड के साथ यथोचित योग कीजिए

(जोड़िए))

उत्तरम्:

क	ख	उत्तरम्
1. खल:	खनित्रम्	छिद्रान्वेषणम्
2. पात्रम्	शोकाराति-परित्राणम्	धेनु:
3. अपात्रम्	छिद्रान्वेषणम्	पन्नग:
4. खननम्	वानर-साङ्घिक:	खनित्रम्
5. मित्रम्	धेनु:	शोकाराति-परित्राणम्
6. राम:	पन्नग:	वानर-साङ्घिक:
7. विद्या	दानाय मदाय च	ज्ञानाय विवादाय च
8. शक्ति:	कृष्ण:	रक्षणाय पीडनाय च
9. धनम्	ज्ञानाय विवादाय च	दानाय मदाय च
10. गोपालसाङ्घिक:	रक्षणाय पीडनाय च	कृष्ण:

प्रश्न 3.

अधोलिखितपदानां पर्यायपदानि पाठात् आकृष्य लिखन्तु-

(निम्नलिखित पदों के पर्याय पाठ में से चुनकर लिखिए-)

उत्तरम्:

पदम्	पर्याय	पदम्	पर्याय
1. पानीयम्	जलम्, वारि	2. दुग्धम्	पयः
3. गौः	धेनुः	4. सर्पः	पन्नगः
5. दुर्जनः	खलः	6. धनम्	अर्थम्
7. शत्रुः	अराति	8. भाग्यम्	विधि
9. वासुदेवः	कृष्णः	10. सुहृद्	मित्रम्

प्रश्न 4.

निम्नलिखित पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखन्तु-

(निम्नलिखित पदों के विलोम पद पाठ से चुनकर लिखिए-)

उत्तरम्:

पदम्	विलोमपदम्	पदम्	विलोमपदम्
दुर्भाषितम्	सुभाषितम्	2. सम्पन्नता	दरिद्रता
सज्जनः	खलः	4. नीचैः	उच्चैः
दुःखी	सुखी	6. प्रत्यक्षम्	परोक्षम्
अनुकूलः	प्रतिकूलः	8. हिंसा	अहिंसा
गुणः	दोषः	10. अदेयम्	देयम्

प्रश्न 5.

स्थूलाक्षरपदमाश्रित्य (उदाहरणम् अनुसृत्य च) संस्कृतेन प्रश्नवाक्य-निर्माणं क्रियताम्-

(मोटे अक्षर वाले पदों को आश्रय लेकर (उदाहरण का अनुसरण करते हुए) संस्कृत में प्रश्न-वाक्य बनाइये-)

उत्तरम्:

वाक्य	प्रश्न वाक्य
1. **सर्वे जन्तवः** तुष्यन्ति।	1. के तुष्यन्ति?
2. **काको** न गरुडायते।	2. कः न गरुडायते?
3. **खलस्य** विद्या विवादाय भवति।	3. कस्य विद्या विवादाय भवति?
4. साधोः विद्या **ज्ञानाय** भवति।	4. साधोः विद्या कस्मै भवति?
5. वर्जयेत् **तादृशं** मित्रम्।	5. वर्जयेत् कीदृशं मित्रम्?
6. **आततायिनं** हन्यात्।	6. कम् हन्यात्?
7. **विधौ अनुकूले** देयम्।	7. कस्मिन् अनुकूले देयम्?

प्रश्न 6.

अधोलिखित-पदानि आधृत्य (उदाहरणं च अनुसृत्य) संस्कृतेन वाक्य-निर्माण क्रियताम्-

(निम्नलिखित पदों को आधार मानकर (उदाहरण का अनुसरण कर) संस्कृत में वाक्य निर्माण कीजिए-)

उत्तरम्:

पदानि	**वाक्यानि**
1. दरिद्रता	**दरिद्रता** सदा दु:खदायिनी भवति।
2. त्रीणि	**त्रीणि** फलानि पतन्ति।
3. यथा	**यथा** यथा जलं वर्षति तथा तथा नद्य: वहन्ति।
4. इव	पात्रापात्र विवेक: **धेनुपन्नगयोरिव** अस्ति।
5. सुखी	त्यक्त लज्ज: **सुखी** भवेत्।
6. कश्चन	हन्तु: **कश्चन** दोष: न भवति।
7. धर्म:	अहिंसा परमो **धर्म:**।
8. राम:	**राम:** वानरसाङ्गिक:।